महादेवी की काव्यगत विशेषताएँ (बी.ए. द्वितीय वर्ष के छात्रों के लिए)

महादेवी छायावाद के चार प्रमुख स्तंभों में से एक हैं। इनकी कविताएँ छायावादी काव्यधारा में अपना विशिष्ट स्थान रखती हैं। इनकी काव्य-कला इन्हें छायावादी युग से लेकर आज तक के कवियों से पृथक पहचान प्रदान करती है। इनकी काव्यकला की प्रथम विशेषता है गेयता। इनकी कविताओं का प्राणतत्व है गीत। इनके गीत पूर्णतः गेय हैं और गाए जाने पर अत्यंत मधुर प्रतीत होते हैं। स्वर- संगीत उनके गीतों की आत्मा है। इस स्वर संगीत अर्थात वर्ण-विन्यास की कला उनके गीतों को बहुत सजीवता प्रदान करती है। यही कारण है कि महादेवी वर्मा के गीत हर बर्ग तथा हर आयु-समूह के लोगों को अति प्रिय है। उनके गीतों को सभी चाव से गाते और सुनते हैं। उनके गीत एवं कविताओं की गेयता का गुण उन्हें उच्च कोटि का कवि सिद्ध करता है।

“बिछाती थी सपनों के जाल, तुम्हारी वह करुणा की कोर

गयी वह अधरों की मुस्कान, मुझे मधुमय पीड़ा में बोर”

उनके गीतों में गेयता के गुण के साथ साथ निजता की प्रधानता है। गीत में उन्होंने सर्वत्र निजी भावों का सजीव चित्रण किया है। महादेवी वर्मा ने अपने गीतों में अपने सुखों और दुखों को व्यक्त किया है। उनके ‘निहार’ एवं ‘रश्मि’ में व्यक्तिगत सुख एवं दुख प्रबल भावावेग एवं पूर्ण प्रभाव के साथ उपस्थित है। यद्यपि भावनाओं की अभिव्यक्ति वे अत्यंत सांकेतिक रूप से करती हैं। उनके गीतों में आत्मकथात्मक अभिव्यक्ति दिखाई देती है। अनेक विद्वानों का कहना है कि महादेवी की कविताएँ उनकी आत्मकथा प्रतीत होती है। निम्नलिखित उदाहरणों से उनकी कविता में निजता की प्रधानता और वैयक्तिकता की प्रबलता को भली-भाँति समझा जा सकता है।

जो तुम आ जाते एक बार

वह कौन है

मैं नीर भरी दुःख की बदली

क्या पूजन क्या अर्चन रे

महादेवी के काव्यकला की अगली विशेषता है भावप्रवणता और अंतःस्फूर्ति। महादेवी की कविता में निजता के कारण भाव-प्रवणता और अंतःस्फूर्ति का होना स्वाभाविक है। कवि जब अपने सुखों-दुखों की अभिव्यक्ति करने की चेष्टा करता है तब वह भले ही संकेतों के माध्यम से अपनी बात करे पर उसमें भावप्रवणता और अंतःस्फूर्ति आ ही जाती है और ठीक इसी प्रकार भावप्रवणता और अंतःस्फूर्ति के फलस्वरूप गेयता उपस्थित हो जाती है। अतीव भावावेश की अवस्था में पहुँचे बिना गीतों की रचना संभव ही नहीं है। उनके गीतों में भावों का सहज प्रवाह दिखाई देता है जो

गीतों की अनिवार्य विशेषता भी है। भावप्रवणता और अंतःस्फूर्ति के साथ ही घनीभूत वेदना भाव भी है। वेदना की इसी गहन अनुभूति के कारण इन्हें विद्वानों ने आधुनिक मीरा कहा है।–

“विस्तृत नभ का कोई कोना, मेरा न कभी अपना होना

परिचय इतना, इतिहास यही, उमड़ी कल थी मिट आज चली”

इनकी काव्यकला की प्रमुख विशेषता गीतात्मकता है जिसे और सशक्त बनाती है उनकी अलंकृत और सहज शैली। उनके गीतों में भावों का सहज प्रवाह है, भाषा अलंकार के आडंबर से रहित है। ये समस्त विशेषताएं मिलकर उनके गीतों को श्रेष्ठतम् गीतों की श्रेणी में शामिल करती है। भावों एवं प्रसंगों के अनुरूप सहजता से अलंकार आए हैं, कहीं भी अलंकारों को सायास लाने की कोशिश महादेवी ने नहीं की है। यही कारण है कि इनके काव्य में कहीं भी बोझिलता नहीं आती है। भाव-पक्ष एवं कला पक्ष के उचित सामंजस्य से काव्य पाठकों एवं श्रोताओं को उस आनंदानुभूति की प्रतीति करवाती है जिसका वर्णन काव्यशास्त्री करते आए हैं।

“निशा की धो देता राकेश, चाँदनी में जब अलकें खोल

कली से कहता था मधुमास, बता दो मधुमदिरा का बोल।”

महादेवी के काव्य में वेदना प्रमुख तत्व बनकर उपस्थित है। वह स्वयं भी अपनी कविता में घनीभूत वेदना के संदर्भ में कहती हैं-

“बचपन से ही भगवान बुद्ध के प्रति एक भक्ति या अनुराग होने के कारण उनकी संसार को दुखात्मक समझनेवाली फिलॉसफी से मेरा असमय ही परिचय हो गया था”

यही कारण है कि महादेवी को अपने चारों ओर दुख ही दुख दिखाई देता है, पीड़ा ही पीड़ा दिखाई देती है। वे समस्त संसार की पीड़ा को अपने अंतस में समा लेने के लिए व्याकुल दिखाई देती हैं। वेदना उनके हृदय की अंतरतम गहराइयों तक व्याप्त है। उनके काव्य का एक-एक शब्द अथाह वेदना की अभिव्यक्ति करता हुआ प्रतीत होता है। महादेवी सुख का आधार भी वेदना को ही मानती हैं।–

“है पीड़ा की सीमा यह, दुःख का चिर सुख हो जाना।”

महादेवी के सम्पूर्ण काव्य-संसार में पीड़ा, वेदना, कसक, टीस आदि की प्रधानता है। यद्यपि निजता, वैयक्तिकता की प्रधानता महादेवी के काव्य की एक प्रमुख विशेषता है तथापि अनेक गीतों में व्यष्टि के दुःख की अपेक्षा समष्टि का दुख वर्णित है। व्यक्तिगत दुःख को सहन करते हुए उन्होंने समाज के दुखों को अनुभव किया है और उसे अभिव्यक्त भी किया है। इससे भी यह पूर्णतः स्पष्ट हो जाता है कि वे बुद्ध के ‘सब्ब दुक्ख’ वाले सिद्धांत को मानती हैं-

मेरे हँसते अधर नहीं

जग की आँसू-लड़ियां देखो।

अपने काव्य में वेदना के तत्वों के समावेश के बारे में स्वयं महादेवी ने कहा है-

“मैं ने पराविद्या से पार्थिवता वाली, वेदांत के अद्वैत की छायामात्र ग्रहण की। लौकिक प्रेम से तीव्रता उधार ली और इन सबको कबीर के सांकेतिक दाम्पत्य-भाव-सूत्र में बाँधकर एक निराले स्नेह संबंध की सृष्टि कर डाली, जो मनुष्य के हृदय को आलम्बन दे सका”

पीड़ा से महादेवी जी का अत्यंत गहरा संबंध है। प्रकृति के उपादानों में भी उन्हें अपने प्रिय का आभास होता है। वे अपने प्रिय को देखने, उससे बातें करने, उससे मिलने को व्याकुल हो उठती हैं। वे विरह को अथाह समुद्र कहती हैं, इस विरह रूपी समुद्र की कोई थाह नहीं है। महादेवी का प्रियतम ससीम नहीं बल्कि असीम है। प्रिय के विरह से उन्हें अत्यंत वेदना है, अथाह पीड़ा है, परंतु उस पीड़ा को छोड़ने के लिए महादेवी तैयार नहीं हैं-

“इस पथ का उद्देश्य नहीं है, श्रांत भवन में टिक रहना

किंतु चले जाना उस हद तक, जिसके आगे राह नहीं।”

विश्व की समस्त वेदना के साथ महादेवी ने स्वयं को एकाकार कर लिया है। वे वेदना को ही गीतों में अभिव्यक्त करती हैं। प्रियतम के विरह की अथाह पीड़ा में डूबी हुई विरह को ही अपना मित्र और प्रियतम मान लेती हैं। एक तरफ निरंतर इनकी भावनाओं पर करुणा और निराशा व्याप्त है तो दूसरी तरफ अपने प्रियतम से मिलने की आकांक्षा भी उनके हृदय में जाग उठती है। महादेवी किसी प्रकार के बंधन से भयभीत नहीं होती हैं। प्रियतम की प्रतीक्षा करती हुई जब थक जाती हैं तो पुनः प्रियतम से ही नींद का वरदान माँगती हैं। परंतु नींद में भी वे दुख को छोड़ना नहीं चाहती हैं। जब उनकी पीड़ा और करुणा चरमसीमा पर पहुँच जाती है तो उस बिंदु पर उनका शरीर रूपी दीपक जलते-जलते क्षीण हो उठता है-

“तू जल-जल जितना होता क्षय, वह समीप आता छलनामय,

मधुर मिलन में मिल जाता तू, उसकी उज्ज्वल स्थिति में घुलमिल।“

महादेवी के काव्य में प्रमुख रूप से गेयता, निजता, भावप्रवणता, सहजता और वेदना तत्व आदि विशेषताएँ हैं।

डॉ. बिभा कुमारी

असिस्टेंट प्रोफेसर,

विश्वेश्वर सिंह जनता महाविद्यालय राजनगर

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय